A Report on the HP SFD funded Training Programme on "Silvicultural and Genetic aspects of Forest Management" organized by HFRI, Shimla for senior officers of Himachal Pradesh State Forest Department (28th - 29th September 2016)

Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized HPSFD funded two days specialized training programme on **'Silvicultural and Genetic aspects of Forest Management'** for Senior Officers of H.P. State Forest Department at HFRI, Shimla during **28-29 Sept. 2016**. 15 delegated including CF's and DCF's took participated in the training programme. The training programme was conducted with a view to enhance the knowledge and also to sensitize senior functionaries of HP Forest department towards various Silviculture and Genetic issues of Forest Management.

At the start, Dr. V.P. Tewari, **Director,** Himalayan Forest Research Institute, Shimla welcomed the Chief Guest Sh. S.P. Vasudeva, IFS, PCCF, HPSFD, Shimla and highlighted the importance of such specialized training programme for upgrading the knowledge and skill of senior forest officers towards Silvicultural and Genetic aspects of Forest Management for ultimately enhancing the productivity of Indian Forests. **Sh. S.P. Vasudeva, IFS, PCCF, HPSFD, Shimla,** in his inaugural address, flagged various Silvicultural and Genetic issues of Forest Management and also briefed about the expectation of department from this training programme.

During the Technical Session in the forenoon on the first day**, Dr. Joachim Schmerbeck, Team Leader, GIZ, Shimla** talked about Forest Fire and Eco-systems services. His presentation was followed by interactive discussion on this topic. After this, **Sh. Kunal Satyarthi, IFS, Joint Member Secretary, SCSTE, Shimla** briefed about the legal issues in forest management and meticulously explained about the local and traditional rights of tribals/villagers according to various acts implemented recently by the Govt. In the afternoon session, the first presentation was made by **Sh. Surinder Kumar, IFS, APCCF, (Retd.)** who explained about the various approaches of sustainable forest management. The next speaker **Sh. B.D. Suyal, IFS, Director, FSI regional office, Shimla** deliberated upon the forest resource assessment for better planning and management and addressed various issues pertaining to scope of GIS & remote sensing applications in monitoring of the forests and plantations. The last speaker of the day was **Dr. S.P Bhardwaj, VC (Retd.) MBU, Solan.** He talked about various issues related to insect-pest management in the Himalayan Forests and suggested to adopt holistic approach using environment friendly methods, preferably bio-pesticides for managing various insect-pests problems in the forest ecosystems.

On the second day of training prograame **Dr. Sanjeev Thakur, Professor & Head, UHF Nauni, Solan** discussed various approaches in forest genetics for improving the productivity viz., traditional tree improvement, clonal forestry and genetic engineering. He also explained about the recent work carried out by the University in this field on Salix, Harar etc. for the benefit of participants. The next speaker of the day was **Dr. B.D. Sharma, Chief Scientist (Retd.), NBPGR, Phagli, Shimla.** In his presentation, he broadly discussed about the basics of tree breeding and genetics in relation to improving the forest and explained various approaches for germplasm conservation of vast forest wealth.

Dr. Rajesh Sharma, Scientist-F, HFRI, in his talk, explained about the genetic improvement and discussed issues related to SPA, Progeny testing, gene and molecular marker studies. Thereafter, **Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F & Head, Silviculture Division, HFRI** deliberated upon the modern nursery techniques and production of quality planting stock for productivity enhancement. The presentation was followed by intensive discussion on the root-trainer seedling production system and raising of tall plant nursery. **Dr. K.S. Kapoor,** Scientist-G and Group Coordinator (Research), HFRI deliberated upon ecological aspects of managing cold desert areas in western Himalayas and emphasized upon the need for selection of native species for eco-restoration of these harsh areas. In the afternoon, **Dr. Vaneet Jishtu,** Scientist, HFRI, Shimla coordinated the visit of the participants to the Museum-cum-Interpretation Centre of the Institute and provided detailed information about the various technologies displayed there.

GCR, HFRI, in his concluding remarks, thanked the participants for sparing their time for the training programme and actively participating in deliberations during the course of this training programme. The training programme ended with the formal vote of thanks proposed by **Dr. Sandeep Sharma**, Coordinator of the training programme.

****

GLIMPSES OF TRAINING PROGRAMME

Two days Training Programme
For
Senior Officers of HP State Forest Department
On
Silvicultural and Genetic Aspects of Forest Management
28th - 29th September, 2016
Organised By
Himalayan Forest Research Institute, Shimla
Sponsored By
State Forest Departement, Himachal Pradesh

हि.व.अ.सं.
HFRI

हि.व.अ.सं.
HFRI

FROM THE PRESS

शिमला में पौधों पर पाठशाला

शिमला — वन वर्द्धन एक बहुत पुरानी व्यवस्था है, जिसकी शुरुआत जर्मनी से हुई थी। पौधशाला में पौधों को उगाने, पौधारोपण, उनके विकास, संरचना, स्वास्थ्य एवं गुणवत्ता के नियंत्रण का व्यावहारिक रूप देने के लिए प्रयासरत रहने की आवश्यकता है। उक्त शब्द हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वन अधिकारियों के लिए 'वन प्रबंधन के वन वर्द्धनिक एवं आनुवांशिकी पहलू' विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में डा. एसपी वासुदेवा, प्रधान अरण्यपाल ने कहे। कार्यक्रम का समापन 29 सितंबर गुरुवार को होगा। इसमें हिमाचल वन विभाग के अरण्यपाल तथा उपअरण्यपाल स्तर के करीब 20 वन अधिकारी भाग ले रहे हैं। उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ डा. एसपी वासुदेवा, प्रधान मुख्य अरण्यपाल ने किया। इस अवसर पर डा. वासुदेवा ने कहा कि वन प्रबंधन के क्षेत्र में बहुत अधिक परिवर्तन एवं प्रगति हुई है, परंतु फिर भी इस दिशा में बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जर्मनी से जोए जिम शेमर बैंक, डा. जीएस गौरया, कुनाल सत्यार्थी, सुरेंद्र कुमार, डा. एसपी. भारद्वाज, बीडी सुयाल, डा. केएस कपूर, डा. राजेश शर्मा, डा. संदीप शर्मा सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

वन बचाने की ट्रेनिंग ले रहे वन अधिकारी

■ पंथाघाटी में शुरू हुआ प्रशिक्षण शिविर

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

◆ कंजरवेटर–डीएफओ रैंक के अधिकारी ले रहे भाग

◆ पीसीसीएफ एसपी वासूदेवा ने किया संबोधित

प्रदेश के वन अफसरों को वन बचाने के लिए ट्रेनिंग दी जा रही है। दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर बुधवार को वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में शुरू हुआ। इसमें कंजरवेटर व डीएफओ रैंक के अधिकारी भाग ले रहे हैं। ट्रेनिंग के शुभारंभ अवसर पर पीसीसीएफ एसपी वासूदेवा ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पौधशाला में पौधों को उगाने, पौध रोपण व उनके विकास पर बल देने की जरूरत है। अपने अनुभवों को सांझा करते हुए उन्होंने कहा कि वन प्रबंधन के क्षेत्र में बहुत अधिक परिवर्तन एवं प्रगति हुई है फिर भी इस दिशा में बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है। वासूदेवा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 66 प्रतिशत भाग वन भूमि है जिसे बचाने के लिए प्रदेश की जनता को भी एकजुट होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि वन विभाग हर साल पौध रोपण करता है। इस अवसर पर निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान डॉ. वीपी तिवारी ने इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण के आयोजन की जिम्मेदारी सौंपने अपना बहुमूल्य सुझाव देने के लिए पीसीसीएफ एसपी वासूदेवा का आभार व्यक्त किया।

वनों से बढ़ सकती है प्रदेश की आय

शिमला, 28 सितम्बर (जस्टा): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वन अधिकारियों के लिए (वन प्रबंधन के वन-वर्धनिक एवं अनुवांशिकी पहलू) विषय पर 2 दिवसीय अग्रवर्ती प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. एस.पी. वासुदेवा ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि हिमाचल के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 66 प्रतिशत भाग वन भूमि है। फलदार पौधों के सघन रोपण से वनों से प्राप्त आय से हिमाचल की सकल घरेलू उत्पाद में बढ़ौतरी की जा सकती है। उन्होंने कहा कि वन अधिकारी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे तथा आयोजकों से आग्रह किया कि इस प्रशिक्षण के दौरान आने वाले प्रमुख विषयों, सुझावों व अनुशंसाओं को विभाग को भेजा जाए।

कार्यशाला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में बोले डॉ. वासुदेवा

पौधशालाओं में तैयार करें लंबे पौधे

वीरवार, 29 सितंबर 2016, अमर उजाला

दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से प्रदेश वन विभाग के वन अधिकारियों के लिए वन प्रबंधन के वन वर्धनिक एवं अनुवांशिक पहलू विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ पीसीसीएफ एसपी वासुदेवा ने किया। वासुदेवा ने प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि वनवर्धन एक बहुत ही पुरानी व्यवस्था है, इसकी शुरुआत जर्मनी से हुई थी। उन्होंने पौधों को उगाने, पौधरोपण, उनके विकास, संरचना, स्वास्थ्य एवं गुणवत्ता के नियंत्रण को व्यवहारिक रूप देने के लिए प्रयासरत रहने बल दिया।